Department of Endocrinology,

Sanjay Gandhi Postgraduate Institute of Medical Sciences, Lucknow

# लिंग विकास के विकार (Disorder of Sex Development) - यह क्या हैं?

सामान्यतः जन्म के बाद बच्चे का बाहरी जननांग को देखकर यह बताया जाता है कि बच्चा लड़का है या लड़की। परंतु करीब 5000 से 6000 बच्चों में एक बच्चा ऐसा जन्म लेता है जिसमें यह बताना बहुत मुश्किल होता है। ऐसी स्थिति को लिंग विकास के विकार कहा जाता है।

लिंगविकास के विकार (Disorder of Sex Development - DSD) एक ऐसी जटिल स्थिति को दर्शाता है जहां व्यक्ति के गुणसूत्र (chromosome), आंतरिक (internal) और बाहरी जननांग (sexual organs) मे तालमेल नहीं होता है। इसके कई प्रकार होते हैं, जो गर्भ में भ्रूण (embryo) बनने के चरण से लेकर शारीरिक बनावट होने के चरण को प्रभावित कर सकते है; जिस वजह से बच्चे की प्रजनन प्रणाली (reproductive organs) और मूत्र भाग (urogenital region) के विकास पर असर पड़ सकता है.

जन्म के समय लिंग विकास के विकार कई तरह से दिख सकते है जैसे:-

- लिंग की लंबाई छोटी रहना, या अप्रत्याशित रूप से बड़ी दिखना।
- पेशाब का रास्ता लिंग की आखिरी छोर पर ना होना।
- दोनों अंडाशय(टेस्टिस/ गोली) का थैली (scrotum) में ना उतरना।
- अंडाशय का नाप एक समान ना (बड़ा छोटा) होना।

कई बार बच्चे की यौन अवस्था के समय DSD का पता चलता है। जैसे:-

- लड़की की महावारी ना आना, चेहरे पर बहुत ज्यादा मात्रा में बालों का उगना /आना ,आवाज भारी होना।
- लड़के में दाढ़ी मूंछ का ना आना या छाती में उभार (स्तन) का बनना।

ऐसा नहीं है कि यदि बच्चे का बाहरी अंग ज्यादा लड़के समान दिख रहा है तो वह लड़का ही होगा या ज्यादा लड़की समान दिख रहा है तो वह लड़की ही होगी। ऐसी स्थिति में बच्चे को एक ऐसे डॉक्टर को दिखाना बहुत जरुरी है जिसे ऐसे बीमारियों की अच्छी समझ है, जैसे बच्चों के हारमोंस के डॉक्टर (Paediatric Endocrinologist)।

इन विकारों से बच्चे के स्वास्थ्य पर आमतौर पर असर नहीं पड़ता है, परंतु एक प्रकार है जिसे कंजना इटल एड्रिनल हाइपरप्लेसिया (Congenital Adrenal Hyperplasia- CAH) कहा जाता है, यदि इस स्थिति में दवाइयों का सही तरह से ना लिया जाए तो बच्चे के स्वास्थ्य को नुकसान और जान को खतरा हो सकता है। CAH के बारे में अन्य पुस्तिका में विस्तार से समझाया गया है। जो कोई CAH के बारे में पढ़ना चाहते हैं, वें कृप्या डॉ. विजयलक्ष्मी भाटिया या डॉ. प्रीति दबडघाव से पुस्तिका के लिए संपर्क करें ।

DSD के कई कारण हो सकते हैं। कारण जानने के लिए वह सही तरह से इलाज के लिए ऐसे बच्चे की शारीरिक जांच और कुछ लेबोरेटरी जांचे कराने की जरूरत होती है, जिसमें गुणसूत्र की जांच (Karyotype),पेट का अल्ट्रासाउंड और हार्मोन की जांच शामिल है। सारी रिपोर्ट देखने के बाद चिकित्सक आपसे विस्तार में चर्चा करते हैं की बच्चे को किस तरह बड़ा करने में बच्चे की भलाई है; तथा आगे चलकर बच्चे के बाहरी अंगों को ठीक करने के लिए किस तरह के ऑपरेशन की मदद ली जा सकती है ताकि शादी की पश्चात संबंध बनाने में कोई दिक्कत ना आए।

DSD में बच्चे के जन्म से लेकर बड़े होने तक अभिभावकों को कई प्रश्नों का सामना करना पड़ता है। संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ (SGPGI) में इस दिक्कत से संबंधित सभी डॉक्टर हैं जैसे बच्चों के हार्मोन के डॉक्टर (Paediatric Endocrinologist), ऑपरेशन के डॉक्टर (Paediatric surgeons and Urosurgeons) और आनुवंशिक विज्ञान के डॉक्टर (Medical Geneticists)। पालकों को बच्चे की स्थिति के बारे में बताया जाता है जिससे कि वह अपने बच्चे का सही लालनपालन कर सकें व सही चिकित्सा करा सकें।

इन बच्चों को परिवार से प्रोत्साहन और मदद की बहुत जरूरत होती है। बच्चे को बाकी बच्चों के समान ही प्यार और विश्वास की जरूरत होती है। हमें यह ध्यान देना चाहिए कि हम बच्चे को बाकी बच्चों से अलग ना महसूस होने दें।

DSD के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी एक अन्य पुस्तिका में उपलब्ध है। यदि आप इच्छुक हैं तो अपने डॉक्टर से पुस्तिका के लिए निवेदन कर सकते हैं।

डॉ. विजयलक्ष्मी भाटिया,
प्रोफ़ेसर,
संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान,
लखनऊ

डॉ. प्रीति दबडघाव,
प्रोफ़ेसर,
संजय गांधी स्नातकोत्तर आयुर्विज्ञान संस्थान,
लखनऊ